गुप्तकालीन भारत में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक दशा का समीक्षात्मक अध्ययन

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

के

सामाजिक विज्ञान संकाय (इतिहास)

में

पी—एच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

प्रस्तावित शोध—प्रारूप की रूपरेखा

2024

शोध पर्यवेक्षक
डॉ. मुकेश कुमार
प्राचार्य
ए.पी.एस.एम. महाविद्यालय, बरौनी

शोधार्थी
रानी कुमारी
इतिहास विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा

1. शोध समस्या का शीर्षकः–

गुप्तकालीन भारत में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक दशा का समीक्षात्मक अध्ययन

2. प्रस्तावना (शोध के मुद्दे / समस्या) :–

गुप्त वंश का इतिहास अभिलेखों के आधार पर श्रीगुप्त से प्रारम्भ होता है। श्रीगुप्त के पश्चात् घटोत्कच गुप्त ने शासन किया। प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार उन दोनों ने महाराज की उपाधि धारण की थी। इस वंश के तीसरे शासक चन्द्रगुप्त प्रथम ने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की थी। आरम्भ के दोनों शासकों की पदवी सामन्त के रूप में थी। चन्द्रगुप्त प्रथम के शासक बनने पर गुप्त राजवंश को एक नया मोड़ मिला। उसकी पत्नी कुमारदेवी लिच्छवि राजकुमारी थी। उसका वर्णन गुप्त अभिलेखों में अत्यन्त गर्व के साथ किया गया है। चन्द्रगुप्त प्रथम के पश्चात् समुद्रगुप्त शासक बना। उसने आर्यावर्त्त और दक्षिण भारत पर विजय करके अपने साम्राज्य का विस्तार किया। समुद्रगुप्त के पश्चात् उसका बड़ा पुत्र रामगुप्त गद्दी पर बैठा। उसके अभिलेखों में गुप्त शासकों की वंशावली में नाम नहीं है। दुर्जनपुर के प्रतिमा लेखों से उसका महाराजाधिराज होने की पुष्टि होती है। रामगुप्त के पश्चात् चन्द्रगुप्त द्वितीय गुप्तवंश का सम्राट बना उसने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने शकों को पराजित कर पश्चिम भारत में सौराष्ट्र काठियावाड़ तक के क्षेत्र तक अपने साम्राज्य का विस्तार किया। चन्द्रगुप्त द्वितीय के पश्चात् कुमारगुप्त प्रथम शासक बना। उसके शासन के अंतिम समय में उसे हूणों के आक्रमण को झेलना पड़ा। कुमारगुप्त प्रथम के पश्चात् स्कंदगुप्त शासक हुआ। उसने अपने बाहुबल से हूणों को परास्त किया। स्कन्दगुप्त के पश्चात् पुरूगुप्त, नरसिंहगुप्त बालादित्य, कुमारगुप्त द्वितीय, बुधगुप्त, भानुगुप्त ने शासन किया। विष्णुगुप्त के पश्चात् वैन्यगुप्त गुप्तवंश का अंतिम शासक बना।

गुप्तों ने लगभग तीन सौ वर्षों तक शासन किया। इतने लम्बी अवधि तक शासन करने का कारण उनकी सुव्यवस्थित शासन व्यवस्था के साथ–साथ उनके नैतिक मूल्य एवं आदर्श थे। इस वंश के शासकों ने मौर्यों के दीर्घ शासन के पश्चात् एक बहुत बड़े क्षेत्र पर शासन किया था जिसके कारण पुनः एक अखण्ड साम्राज्य की नींव पड़ी थी। गुप्त सम्राटों ने महान् दिग्विजय की और अपने अधीनस्थ सामंतों एवं शासकों के प्रति सौहार्दपूर्ण नीति का पालन किया। अनेक शासकों की स्वायत्त स्थिति को समाप्त कर दिया। साम्राज्य के

पड़ोसी और सीमावर्ती क्षेत्रों के शासकों के साथ गुप्त सम्राटों ने मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किये। यही कारण है कि उत्तर भारत में गुप्त शासक निर्विघ्न होकर शासन कर सके। गुप्त सम्राटों ने अपने अदम्य उत्साह, शौर्य, संगठन एवं विजयों से एक विशाल साम्राज्य का निर्माण किया। गुप्त साम्राज्य अपने उत्कर्ष काल में पूर्व में बंगाल से लेकर पश्चिम में गुजरात, सौराष्ट्र तक फैला था, इसकी अभिलेखों से पुष्टि होती है। गुप्तों के शासन की नीतियों का दिग्दर्शन उसके समकालीन वाकाटक राजवंश में भी अवतरित हुआ। यह गुप्त वंश की तत्कालीन भारत के लिए एक बहुत बड़ी देन है। गुप्तों के अभिलेखों का वर्गीकरण राजाओं के क्रम से किया गया है। गुप्तों ने अपने शौर्य एवं पराक्रम से एक विशाल साम्राज्य की नींव डाली। अतः उनके अभिलेख विभिन्न स्थानों से प्राप्त हुए हैं। यथा–प्रयाग, एरण, मथुरा, उदयगिरि, गढ़वा, साँची, मेहरौली, बिलसद, धनाइदाह, तुमैन, कलैकुरि, दामोदरपुर, मानकुँवर, मंदसौर, जूनागढ़, कहौम, इंदोर, मितरी, बिहारशरीफ, सूपिया, सारनाथ, बनारस, गुणैधर इत्यादि। अभिलेखों के विभिन्न स्थानों से प्राप्त होने से विदित होता है कि गुप्त युग में इन सभी स्थानों का ऐतिहासिक महत्व रहा होगा। गुप्त युग में ताम्र पत्र जारी किये गये थे। ताम्रपत्रों का संबंधी मुख्यतः सम्राटों के भूदान या ग्राम दान और मुद्रा दान से है। गुप्तों के सामन्तों के द्वारा भी बड़ी संख्या में ताम्र पत्र जारी किये गए थे।

राज्य की सुव्यवस्थित सामाजिक स्थिति उस राज्य के कुशल प्रशासन को प्रकट करती है। गुप्तकालीन समाज अत्यन्त समृद्ध और उन्नत अवस्था में था। गुप्तकालीन वर्णव्यवस्था के अनुसार समाज चार वर्णों में विभक्त था। लेकिन अभिलेखों में तीन वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य का उल्लेख हुआ है। इसके अतिरिक्त अभिलेखों में एक नया वर्ण कायस्थ का उल्लेख हुआ है। कायस्थ की गणना किसी उपजाति में नहीं थी। कायस्थ को किस वर्ण के अंतर्गत रखा जाय यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। मूलतः कायस्थ लेखन कार्य से संबंधित थे। इसके अतिरिक्त अन्य जातियाँ अस्पृश्य और वनों में रहने वाली जंगली जाति थी। उनका उल्लेख अभिलेखों में नहीं मिलता। आश्रम व्यवस्था का विस्तृत विवरण अभिलेखों से प्राप्त नहीं होता। फिर भी उत्तर गुप्तवंशी शासक आदित्यसेन के अफसद लेख में उसके पूर्वज जीवितगुप्त प्रथम के पुत्र कुमारगुप्त ने प्रयाग में अग्नि में प्रवेश कर प्राण त्यागा था। गुप्तकाल में आश्रम व्यवस्था का पालन किस सीमा तक होता था, इसके स्पष्ट साक्ष्य अभिलेखों से नहीं मिलते। तत्कालीन समाज में संयुक्त परिवार की

प्रथा प्रचलित थी। परिवार का स्वामी वयोवृद्ध सदस्य होता था। उसी के अनुशासन पर पूरा परिवार आश्रित रहता था। समुद्रगुप्त के एरण लेख से ज्ञात होता है कि समुद्रगुप्त के महल का आँगन अनेक पुत्र, पौत्रों तथा कुलवधुओं के आनन्दमय शब्दों से गुंजित होता था। समाजिक प्रथाएँ, सतीप्रथा, बाल विवाह, दास प्रथा, नियोग आदि विद्यमान थीं। इनके बने रहने से स्त्रियों की शिक्षा और विकास की गति अवश्य प्रभावित हुई। नारी को गुप्तकालीन समाज में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था तथा उसे पुरूषों के समान शिक्षा और शासन कार्य में सक्रिय रूप से भाग लेने का अधिकार प्राप्त था। प्रभावती गुप्ता के द्वारा अपने पति के मृत्यु के बाद राज्य की संरक्षिका के रूप में शासन करना स्त्रियों की बहादुरी और कार्यकुशलता का परिचायक है। राजा–रानी प्रकार के सिक्के से स्त्रियों की अच्छी स्थिति का ज्ञान होता है। इस काल में अनुलोम एवं प्रतिलोम विवाह प्रचलित थे। लेकिन इसके अभिलेखीय साक्ष्य प्राप्त नहीं होते। बहुपत्नी विवाह समाज के उच्च वर्ग में प्रचलित थी। जिस समाज में बहुपत्नी विवाह प्रचलित हो उस समाज में नारियों की स्थिति को अच्छा नहीं कहा जा सकता। फिर भी स्त्रियाँ अपने पतिव्रत धर्म को निभाना अच्छी तरह जानती थी। समुद्रगुप्त के एरण लेख में कहा गया है कि उसकी कुलवधु पति परायण तथा सर्वगुण संपन्न थी। इस काल में पुरुष उत्तरीय (दुपट्टा) और अधोवस्त्र धोती पहनते थे तथा सिर पर पगड़ी भी बाँधते थे। स्त्रियाँ साड़ी और चोली पहनती थीं। मौसम के अनुसार ऊनी वस्त्रों का भी प्रयोग होता था। अभिलेखों में बुनकर समिति का उल्लेख हुआ है। लेकिन वस्त्र के आकार प्रकार की जानकारी हमें सिक्कों एवं भित्ति चित्रों से प्राप्त होती हैं। स्त्री एवं पुरूष दोनों में अपने बालों को लंबा रखकर घुंघराला बनाने की प्रथा थी। वे सुगंधी का इस्तेमाल भी करते थे। स्त्री एवं पुरूष आभूषणों से सज्जित रहते थे। आभूषण रत्नजड़ित एवं स्वर्ण और मोती के होते थे। प्रजा में मनोविनोद के लिए जुआ, चौपड़ और शिकार का प्रचलन था। स्त्रियों का नौका–विहार एवं जल–क्रीड़ा द्वारा मनोरंजन किया जाता था। गुप्त साम्राट समुद्रगुप्त स्वयं वीणा वादन में पारंगत था। चन्द्रगुप्त द्वितीय एवं कुमार गुप्त प्रथम के सिक्कों में उसे वन्य पशुओं का शिकार करते हुए दिखाया गया है। मुर्गे, भैंसों, भेड़ों को लड़ाना भी लोगों के मनोरंजन के साधन थे। अतः उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि गुप्तकालीन समाज में मनोरंजन के साधन उपलब्ध थे। लोग अपनी रूचि के अनुसार मनोरंजन करते थे और अपने को स्वस्थ और स्फूर्तिपूर्ण रखते थे। इस काल में शाकाहारी भोजन प्रचलित था। गेहूँ, जौ फल तथा सब्जियाँ लोगों का प्रिय भोजन था। माँस और मदिरा का सेवन समाज के

निम्न वर्ग और वर्जित वर्ग के लोगों तक ही सीमित था। अभिलेखों में भोजन के लिए दान की व्यवस्था दी गई है। भोजन सस्ता था तथा समाज में भोजन और पेय की व्यवस्था अच्छी थी। अभिलेखों में भोजन सामग्री का विस्तृत विवरण मिलता है।

आर्थिक संपन्नता की दृष्टि से गुप्तकाल इतिहास में प्रसिद्ध है। इस युग में आंतरिक शांति, सफल प्रशासन, सुरक्षा तथा यातायात के साधनों की अच्छी व्यवस्था से भारत का आंतरिक तथा विदेशी व्यापार बहुत उन्नत हो गया था। उनकी जीविका मुख्यतः कृषि पर निर्भर थी। कृषि के लिए शासकों ने सिंचाई की भी अच्छी व्यवस्था की थी। इसकी पुष्टि जूनागढ़ लेख से होती है। सिंचाई की अच्छी व्यवस्था रहने से धान, गेहूँ, जौ, ईख, बाजरा, आम, कटहल की विशेष पैदावार होती थी। पशुपालन भी होता था। कृषक वर्ग गौपालन करता था। उद्योग और व्यवसाय में गौपालन किस सीमा तक होता था। इसका स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता है। इस काल में जड़ाई, वस्त्र बुनाई, उद्योग धंधे का कार्य व्यापक रूप से होता था। व्यापारिक श्रेणियाँ भी स्थापित थी। श्रेणियों के स्वयं के रीति रिवाज और नियम होते थे। उसका उल्लंघन राजद्रोह माना जाता था। तंतुवाय श्रेणी, शिल्पकार, वणिक आदि की भी श्रेणियाँ विद्यमान थी। मुहरों के लेखों के अध्ययन से पता चलता है कि इसके संगठन में श्रेणिन सार्थवाह और कुलिक शामिल थे। अनेक देशों से घनिष्ठ संबंध के कारण देश में आयात और निर्यात के साधन सुलभ हो गए। सोने, चाँदी, माणिक तथा बहुमूल्य रत्न अविरल गति से आने लगे। व्यापार जल एवं स्थल दोनों मार्गों से होता था। मौद्रिक व्यवस्था सुदृढ़ थी। देश–विदेश में विनिमय के लिए स्वर्ण मुद्राओं का प्रचलन किया गया। कर की व्यवस्था अच्छी थी। सूद का प्रचलन भी था। भूमि की माप के लिए अभिलेखों में कुल्यवाप शब्द का उल्लेख अधिक मिला है। अभिलेखों में भूमि माप के लिए कुल्यवाप और द्रोण शब्द का प्रयोग मिलता है। कुल्यवाप भूमिमाप की सबसे बड़ी इकाई थी। एक कुल्यवाप आठ द्रोण के बराबर माना जाता था।

धर्म एवं संस्कृति किसी राज्य का एक प्रमुख अवयव होता है। अतः गुप्तकाल में भी अनेक धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ प्रचलित थी। गुप्त सम्राटों में उच्च कोटि की धार्मिक सहिष्णुता के फलस्वरूप इस काल में वैष्णव, शैव, जैन, बौद्ध धर्म सभी धर्मों को सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। गुप्तों के कट्टर वैष्ण धर्मावलंबी होने से वैष्णव धर्म का प्रसार तो स्वाभाविक ही था। साथ ही साथ अन्य धर्मों के प्रति भी अपूर्व सहिष्णुता विद्यमान थी। इसकी पुष्टि तत्कालीन अभिलेखों एवं मुद्राओं से होती है। गुप्त सम्राटों के अभिलेखों से

उनकी सभी धर्मों के प्रति अनुरक्ति न केवल व्यक्तिगत थी बल्कि उन्होंने सार्वजनिक रूप से भी अपने राजकोष से पर्याप्त धन देकर अन्य धर्मों के कल्याणार्थ कार्य संपन्न कराया। इस प्रकार गुप्तकाल धार्मिक सहिष्णुता का काल था। इस काल में सभी धर्मों को सम्मान प्राप्त था।

गुप्तकाल में प्राकृत के स्थान पर प्राचीन आर्यों की भाषा संस्कृत का प्रचलन हुआ। उनके अभिलेख पूर्णरूपेण संस्कृत भाषा में लिखे गये। गुप्तकाल में ब्राह्मी लिपि भी विकसित रूप में प्रकट हुई जो गुप्त लिपि कहलायी। गुप्त लिपि मौर्यकालीन ब्राह्मी लिपि से पूर्णरूपेण परिवर्त्तित लिपि थी। अक्षरों के आकार प्रकार में भी परिवर्तन हुआ। गुप्तकाल में तिथि गणना भी प्रारम्भ की अपेक्षा वैज्ञानिक रीति से होने लगी। आरम्भिक लेखों में पक्षरहित तिथि (1 से 30 तक) थी। परवर्ती लेखों में माह के दोनों पक्षों का नाम मिलता है। माह का प्रारम्भ चैत्र से होता था। गुप्तों ने अपना संवत् भी जारी किया जिसकी तिथि 319 ई. सन् विद्वानों द्वारा निर्धारित मानी गई है। इस प्रकार गुप्तकालीन अभिलेखों के अनुशीलन से सांस्कृतिक इतिहास की जानकारी मिलती है। गुप्त शासकों के समय के राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक इतिहास का विस्तृत वर्णन गुप्त अभिलेखों से ज्ञात होता है। गुप्तों के समय हुए चहुँमुखी विकास की जानकारी अभिलेखों में वर्णित हुई है।

3. पूर्व अध्ययन की समीक्षाः—

गुप्तकालीन अभिलेखों के संदर्भ में कई विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए है। **उदय नारायण राय (1961)** ने अपनी पुस्तक ''सेलेक्टेड इंस्क्रिप्शंस ऑफ गुप्त इरा'' में बताया है कि गुप्त अभिलेखों के सांस्कृतिक पक्ष को स्पष्ट करने के लिए उसके राजनीतिक पृष्ठभूमि का अवलोकन आवश्यक है। राज्य की सुव्यवस्थित सामाजिक स्थिति उस राज्य के कुशल प्रशासन को प्रकट करती है। गुप्तकालीन समाज अत्यन्त समृद्ध और उन्नत अवस्था में था तथा आर्थिक संपन्नता की दृष्टि से गुप्तकाल इतिहास में प्रसिद्ध है। **वासुदेव उपाध्याय (1974)** ने अपनी पुस्तक ''गुप्तकालीन अभिलेख'' में कहा है कि गुप्तकालीन अभिलेखों के अनुशीलन से सांस्कृतिक इतिहास की जानकारी मिलती है। धर्म एवं संस्कृति किसी राज्य का एक प्रमुख अवयव होता है। गुप्तकाल में भी अनेक धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ प्रचलित थी। **दिनेशचन्द्र सरकार (1961)** ने अपनी पुस्तक ''प्राचीन भारतीय अभिलेखों का अध्ययन'' में वर्णन किया है कि गुप्त साम्राज्य अपने उत्कर्ष काल में पूर्व में

बंगाल से लेकर पश्चिम में गुजरात, सौराष्ट्र तक फैला था, इसकी अभिलेखों से पुष्टि होती है। गुप्तों के शासन की नीतियों का दिग्दर्शन उसके समकालीन वाकाटक राजवंश में भी अवतरित हुआ।

उपरोक्त साहित्य के समीक्षा से यह स्पष्ट है कि प्रस्तावित शोध का शीर्षक ''**गुप्तकालीन भारत में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक दशा का समीक्षात्मक अध्ययन**'' न केवल एक मौलिक कार्य होगा बल्कि ज्ञान के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देगा जिसका समकालीन महत्त्व है।

4. अध्ययन क्षेत्रः—

अध्ययन क्षेत्र के रूप में प्राचीन भारतीय गुप्तकालीन अभिलेखों का चयन किया जाएगा।

5. अध्ययन का महत्त्व :—

गुप्तकाल भारतीय इतिहास में स्वर्णयुग के नाम से विख्यात है। इस स्वर्णिम युग में राजनीतिक क्षेत्र के अतिरिक्त सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में अद्वितीय समृद्धि हुई जिसके कारण गुप्तकाल की स्वर्णिम युग की उपाधि सार्थक सिद्ध हुई। गुप्त अभिलेखों के सांस्कृतिक पक्ष को स्पष्ट करने के लिए उसके राजनीतिक पृष्ठभूमि का अवलोकन आवश्यक है। गुप्तों की उत्पत्ति के प्रश्न पर इतिहासकारों में मतैक्य नहीं है। अल्तेकर, आयंगर और एलन ने गुप्तों को वैश्य माना है। डॉ. राय चौधरी ने गुप्तों को ब्राह्मण माना है, जबकि पंडित गौरी शंकर ओझा और डॉ. वासुदेव उपाध्याय गुप्तों को क्षत्रिय मानते हैं। डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल ने गुप्तों को शूद्र माना है। इसके लिए उन्होंने कौमुदी महोत्सव नाटक के पात्र चण्डसेन को कारस्कर बताया है। उन्होंने चन्द्रगुप्त को चण्डसेन मानकर उसे हीन जाति का कहा है। परन्तु अभिलेखों के अनुशीलन करने से गुप्तों को क्षत्रिय श्रेणी में रखा जा सकता है। अधिकांश प्रमाण और आधुनिक विद्वान वर्ग भी गुप्तों को क्षत्रिय स्वीकार करते हैं।

6. अध्ययन की प्रासंगिकता

भारतीय इतिहास के अध्ययन में गुप्तकालीन अभिलेखों को सर्वोत्तम विश्वसनीय स्रोत माना जाता है। सामान्यतः पाषाण खण्ड, पाषाण स्तम्भ, ताम्र पत्र, धर्म स्मारक, राजमहल, मुद्रा, देवालय स्मारक आदि में अंकित अभिलेख किसी भी क्षेत्र के राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक पक्ष का मूक गवाह होता हैं। गुप्तकालीन अभिलेखों से न केवल

राजकीय और प्रशासनिक कार्यों की जानकारी मिलती हैं, बल्कि राजाओं की वंशावलियों, दानशीलता व विजयोत्सव का भी सटीक ज्ञान प्राप्त होता हैं। प्राचीन भारतीय इतिहास के निर्माण में अगर गुप्तकालीन अभिलेखों का मार्गदर्शन नहीं होता तो निश्चित रूप से इतिहासकार वास्तविक इतिहास के कुछ विशेष पहलूओं से वंचित रह जाते। गुप्तकालीन अभिलेख वास्तव में प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोतों में हमेशा अग्रणी और विश्वसनीय रहे हैं।

अतः गुप्तकालीन अभिलेखों के अध्ययन से स्पष्ट है कि प्रस्तावित शोध का शीर्षक ''**गुप्तकालीन भारत में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक दशा का समीक्षात्मक अध्ययन**'' वर्तमान समय में भी प्रासंगिक है।

7. अध्ययन का उद्देश्यः—

प्रस्तावित अध्ययन का निम्नलिखित उद्देश्य होगा—

- गुप्तकालीन भारत में वर्णित सांस्कृतिक जीवन का अध्ययन करना।
- गुप्तकालीन भारत में वर्णित सामाजिक एवं आर्थिक जीवन का अध्ययन करना।
- गुप्तकालीन भारत में वर्णित राजनीतिक एवं धार्मिक जीवन का अध्ययन करना।
- प्रारंभिक गुप्त शासकों के अभिलेख एवं उनकी ऐतिहासिकता का विश्लेषण करना।

8. अध्ययन पद्धतिः—

प्रस्तावित शोध कार्य को पूरा करने के लिए मौलिक और सामान्य स्रोतों से तथ्यों, विवरणों, घटनाक्रमों की सापेक्षताओं को संग्रह किया जाएगा। मौलिक स्रोत के अन्तर्गत अभिलेख, वक्तव्य, अप्रकाशित शोध ग्रन्थ आदि स्रोतों में तथ्य संग्रह किए जाएँगे। सामान्य स्रोत के अन्तर्गत प्रकाशित पुस्तकों, पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख, तथा समाचार पत्रों की सूचनाएँ आदि स्रोत सम्मिलित किए जाऐंगे। इस विषय पर नेशनल अभिलेखागार, नई दिल्ली, नेहरू मेमोरियल म्यूजियम और पुस्तकालय नई दिल्ली, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय पुस्तकालय नई दिल्ली, दिल्ली विश्वविद्यालय पुस्तकालय, खुदावक्श पुस्तकालय पटना, नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता तथा केन्द्रीय पुस्तकालय, ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय में पर्याप्त स्रोत सामग्री उपलब्ध है।

9. परिकल्पनाः—

प्रस्तावित शोध कार्य इस परिकल्पना पर आधारित है कि प्राचीन भारतीय गुप्तकालीन अभिलेखों के सांस्कृतिक पक्ष को स्पष्ट करने के लिए उसके राजनीतिक पृष्ठभूमि का अवलोकन आवश्यक है।

10. कार्य योजनाः–

प्रस्तावित शोध–प्रबन्ध में निम्नलिखित अध्याय होंगेः–

अध्याय – 1 : गुप्त वंश का इतिहास एवं प्रमुख अभिलेखों का विवरण

अध्याय – 2 : गुप्तकालीन भारत में वर्णित सांस्कृतिक जीवन

अध्याय – 3 : गुप्तकालीन भारत में वर्णित सामाजिक एवं आर्थिक जीवन

अध्याय – 4 : गुप्तकालीन भारत में वर्णित राजनीतिक एवं धार्मिक जीवन

अध्याय – 5 : प्रारंभिक गुप्त शासकों के अभिलेख एवं उनकी ऐतिहासिकता

अध्याय – 6 : निष्कर्ष

संदर्भ ग्रन्थों की सूची

11. संदर्भ ग्रंथ–सूचीः–

1 उपाध्याय, वासुदेव (1952), गुप्त साम्राज्य का इतिहास, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद।

2 उपाध्याय, वासुदेव (1974), गुप्तकालीन अभिलेख, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना।

3 राय, उदय नारायण (1961), सेलेक्टेड इंस्क्रिप्शंस ऑफ गुप्त इरा, सीवांक प्रकाशन, ग्वालियर।

4 सरकार, दिनेशचन्द्र (1961), प्राचीन भारतीय अभिलेखों का अध्ययन, साहित्य भवन प्रकाशन, नई दिल्ली।

5 गुप्त, परमेश्वरीलाल (1970), गुप्त साम्राज्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

6 फ्लीट, जे. एफ. (1974), भारतीय अभिलेख संग्रह, अनुवादक गिरजाशंकर मिश्र, जयपुर।

7 वाजपेयी, अग्रवाल एवं कुमार (1992), ऐतिहासिक भारतीय अभिलेख, पब्लिकेशन स्कीम, जयपुर।

8 वाजपेयी एवं कुमार (1992), गुप्तकालीन मूर्तिकला का सौन्दर्यात्मक अध्ययन, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली।

9 मजूमदार, रमेशचन्द्र (1968), गुप्तयुग, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन इलाहाबाद।

10 राय चौधरी, हेमचन्द्र (1938), प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास, ज्ञानगंगा प्रकाशन, नई दिल्ली।

11 प्रतिवेदन, आर्किलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया।

शोध पर्यवेक्षक
डॉ. मुकेश कुमार
प्राचार्य
ए.पी.एस.एम. महाविद्यालय, बरौनी

शोधार्थी
रानी कुमारी
इतिहास विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा